MARCH
Appointments

हिन्दी - विभाग

डॉ० कविता कुमारी सिंह

P.G, II Sem.

विषय — देश का विभाजन और उपन्यास

साहित्य समाज का दर्पण होता है और उसमें अपने समय के दस्तावेजीकरण की ताकत होती है। एकता हमारे स्वाधीनता संघर्ष की धुरी थी, किन्तु देश विभाजन से एकता की नींव हिल गई। आजादी की सबसे बड़ी कीमत विभाजन के तौर पर चुकानी पड़ी। इस त्रासदी से लाखों लोग शिकार हुए और उन्हें बेघर होना पड़ा। कत्लेआम हुआ और लाखों जिंदगियाँ इसकी भेंट चढ़ गई। आज भी जब आजादी का जश्न मनाया जाता है तो यह त्रासदी जेहन में ताजा हो जाती है। हिन्दी साहित्य में भी विभाजन का विषय हमेशा आता रहा है और उपन्यासकारों ने अपने हिसाब से इस त्रासदी को लिखा।

देश-विभाजन की घटना साहित्यकार के भावुक मन की कहीं गहराई तक बेधदेने वाली घटना है।

M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F S S M T W T F
7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30
APR 2020
within you say "you cannot paint," then by all means paint and that voice will be silenced. – Vincent Van Gogh

भारत विभाजन तथा उससे उत्पन्न होनेवाली समस्याओं के सभी आयामों को पकड़ने और उन्हीं समस्याओं की पूरी यथार्थता के साथ प्रयास किया है। इस विषय पर जितनी प्रभावशाली व सशक्त रचनाएँ हिन्दी उपन्यास साहित्य में दृष्टिगोचर होती है अन्य किसी विधा में नहीं।

प्रख्यात उपन्यासकार यशपाल के दो खण्डों में प्रकाशित उपन्यास 'झूठा-सच' "विभाजन की त्रासदी पर हिन्दी में लिखा गया पहला ऐसा उपन्यास है जो इसे विराट ऐतिहासिक राजनीतिक फलक पर प्रस्तुत करता है और विभाजन के बाद स्वाधीन भारत में शुरू होनेवाली राजनीतिक प्रक्रियाओं तथा स्वाधीनता संघर्ष के मूल्यों में होनेवाले क्षरण को यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया गया है। इसका पहला खण्ड 'वतन और देश' 1958 में और दूसरा खण्ड 'देश का भविष्य' 1960 में प्रकाशित हुआ। पहले खण्ड की घटनाएँ विभाजनपूर्व लाहौर में घटित होती है और दूसरा

१९०३ विभाजन के बाद दिल्ली में केन्द्रित होती है
उपन्यास १९४२ से लेकर १९५७ तक के कालखण्ड
का वास्तविक चित्र प्रस्तुत करता है।

विभाजन को लेकर लिखा गया भीष्म साहनी के उपन्यास 'तमस' भी यशपाल के 'झूठा-सच' की तरह ही आधुनिक क्लासिक की श्रेणी में रखा जाता है। लेखक को इसे लिखने की प्रेरणा 1970 में भिवंडी जलगाँव और महाड में हुए साम्प्रदायिक दंगों में मिली थी और वहाँ के दौरे ने उनकी रावलपिंडी की यादों को ताजा कर दिया था। इस उपन्यास का फलक 'झूठा-सच' जैसा विराट तो नहीं लेकिन साम्प्रदायिक हिंसा को भड़काने की तकनीक और विभिन्न समुदायों के बीच असुरक्षा और दूसरे समुदायों के प्रति नफरत पैदा करने की प्रक्रियाओं का सूक्ष्म अध्ययन पेश किया गया है। राही मासूम रज़ा का आधा गाँव भी विभाजन से पहले की घटनाओं और उसके कारण सामाजिक ताने-बाने के छिन्न-भिन्न होने की प्रक्रिया को

पाठक के सामने लाता है। भीष्म साहनी के 'तमस' में साम्प्रदायिकता की समस्या का सीधा साक्षात्कार है। रावलपिंडी व उसके आस-पास 1947 में हुए साम्प्रदायिक दंगों को लेखक ने अपनी रचना का विषय बनाया। पाँच दिनों के दंगों में इन्सान हिन्दू, सिख एवं मुसलमान किस तरह की अमानवीय यातनाओं से गुजरते हैं, किस प्रकार साम्प्रदायिक दल दंगे भड़काने के षड़यंत्र करते हैं और किस प्रकार उन दंगों के शिकार लोग स्वयं अमानवीय व ~~संवेदनशील~~ संवेदनशून्य बनते हैं इन सभी स्थितियों का अंकन भीष्म साहनी ने बड़े नाटकीय किन्तु यथार्थ रूप में किया है। मासूम रजा के उपन्यास आधा गाँव मूलतः एक आंचलिक उपन्यास है जो उत्तरप्रदेश के गंगोली गाँव (जिला गाजीपुर) भौगोलिक सीमा के इर्द-गिर्द बुना गया है। 'आधा गाँव' ऐतिहासिक दस्तावेज है जो तत्कालीन राजनीतिक यथार्थ की पृष्ठभूमि पर हमारे सामने लाया गया है।